Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

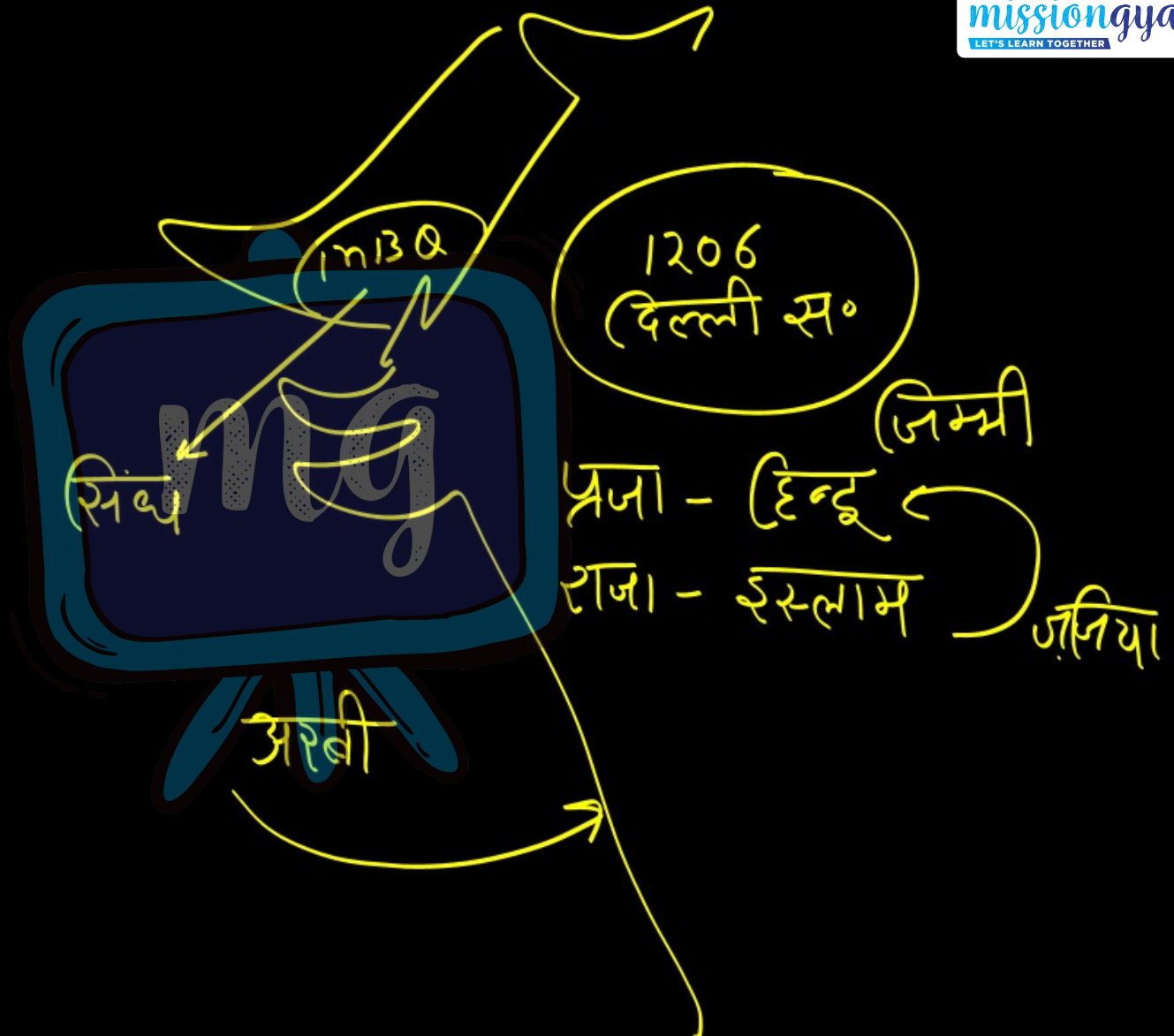
भाग - 5

प्रीतेश जोशी



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



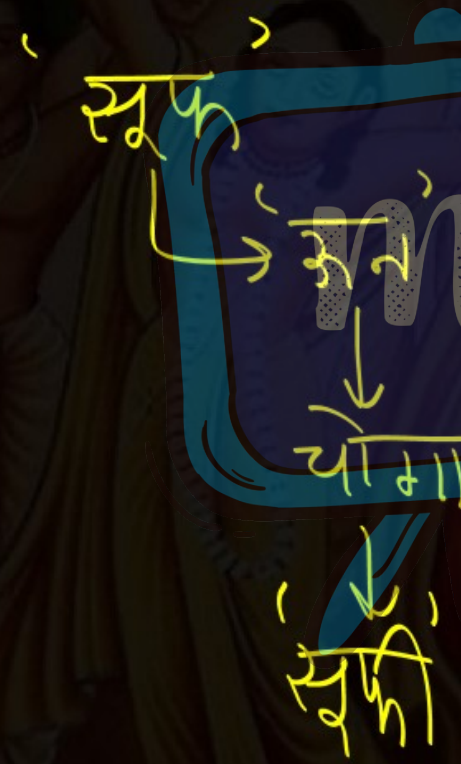
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



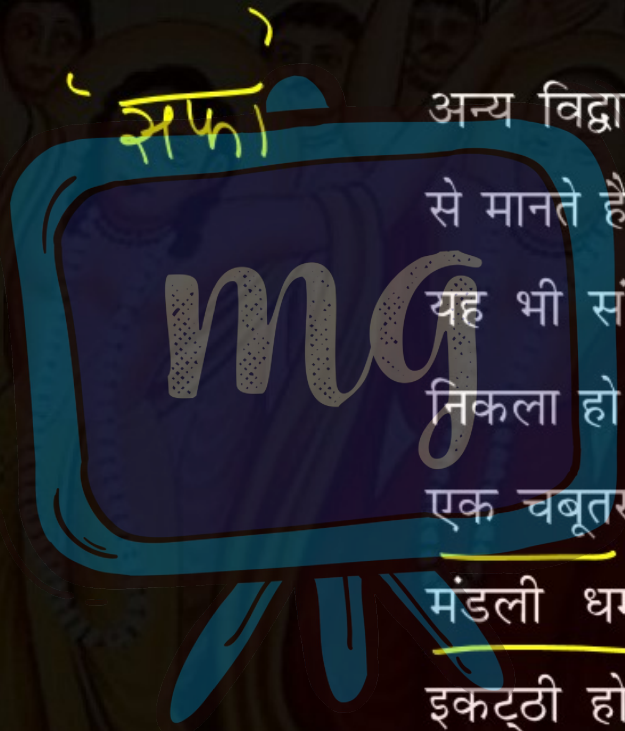
सूफ़ीवाद और तसव्वुफ़

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है तसव्वुफ़ (कल्पना, विचार, ख्याल)।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़ (पवित्र)। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 'सूफीवाद' शब्द का उद्भव लिखिए ?



→ 9वी

→ 'सूफ'

→ सूफ → ऊन

→ 'सफा' → पवित्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सूफीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

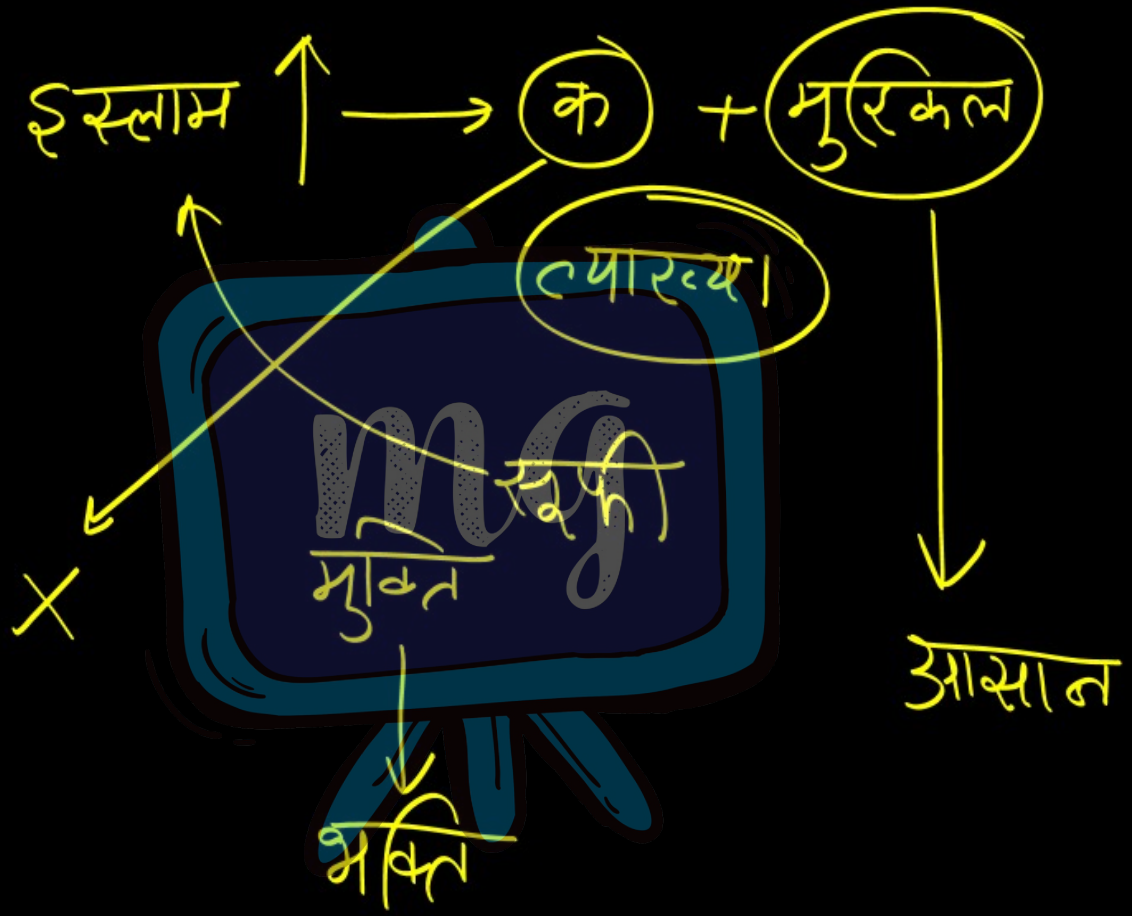
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

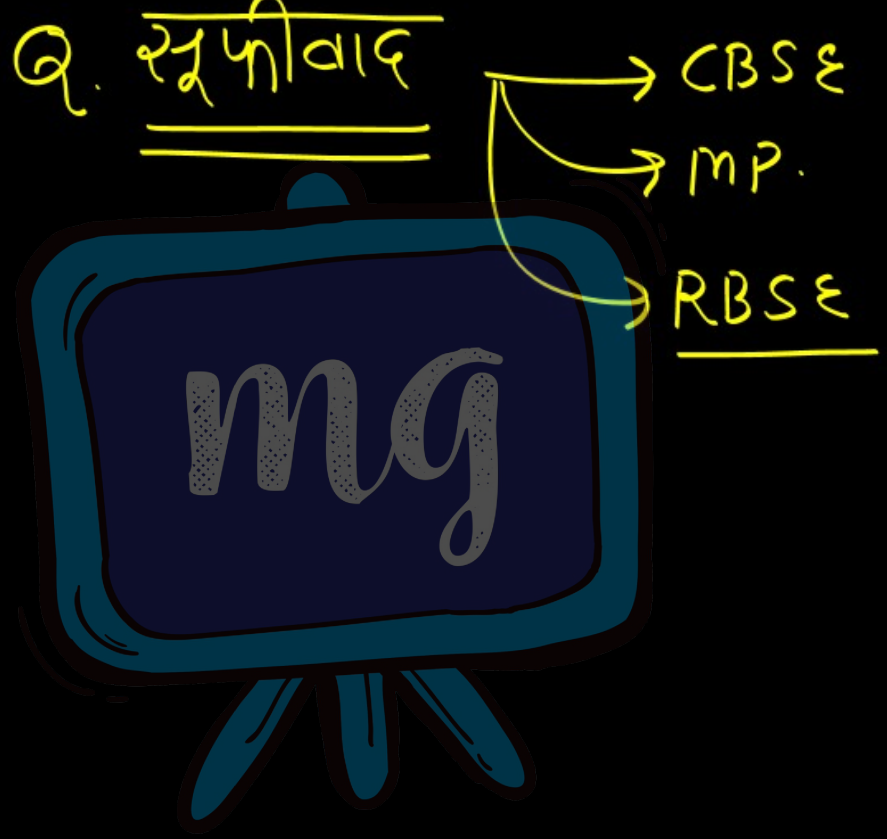
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख/ पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

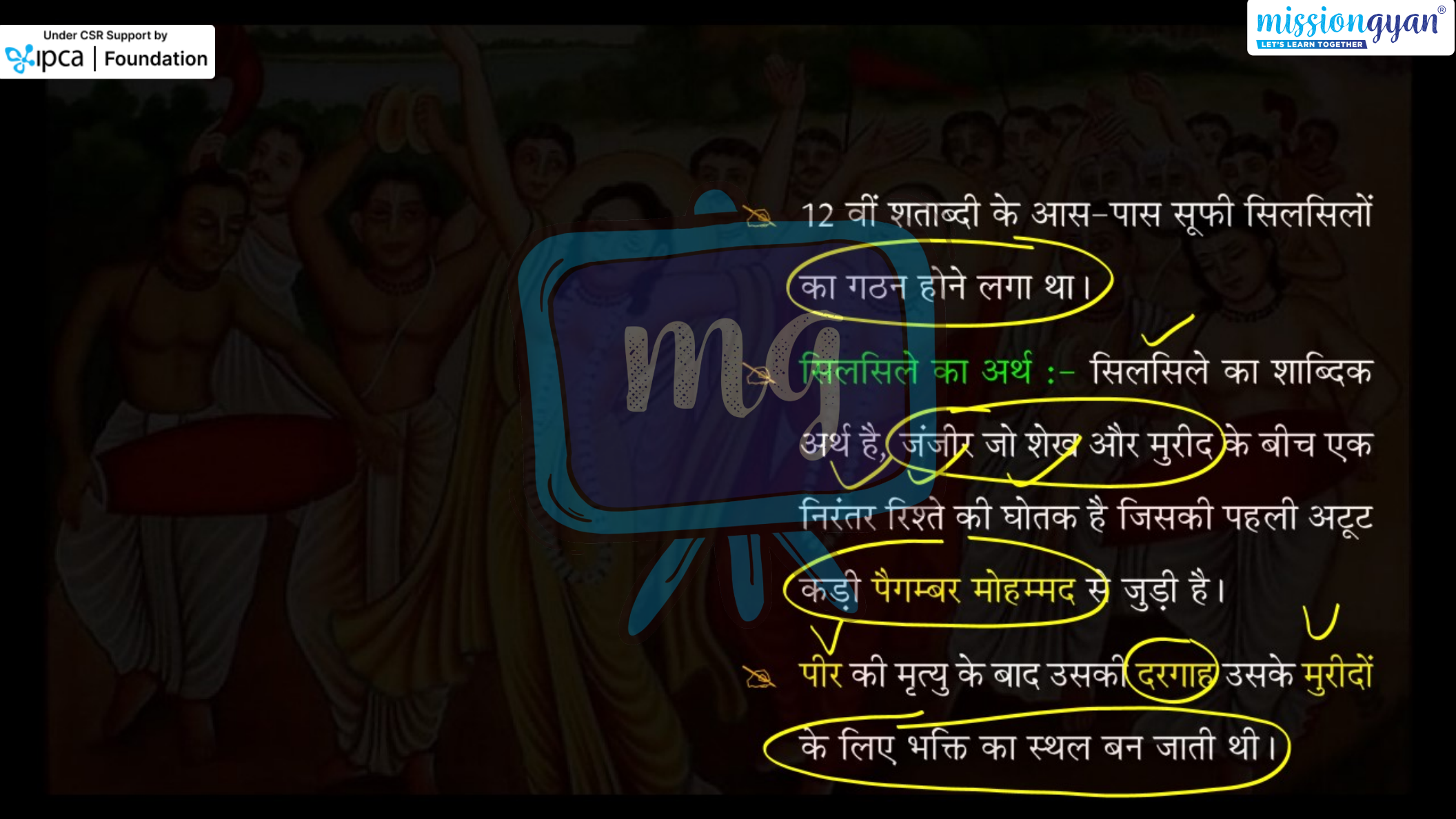
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सूफी शब्दावली

- खानकाह – सूफी संत का आध्यात्मितक क्षेत्र (आश्रम)
- शेख / पीर – गुरु
- मुर्शीद – शिष्य
- वारिस / खलीफा – उत्तराधिकारी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- सिलसिले का अर्थ :- सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की घोतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।

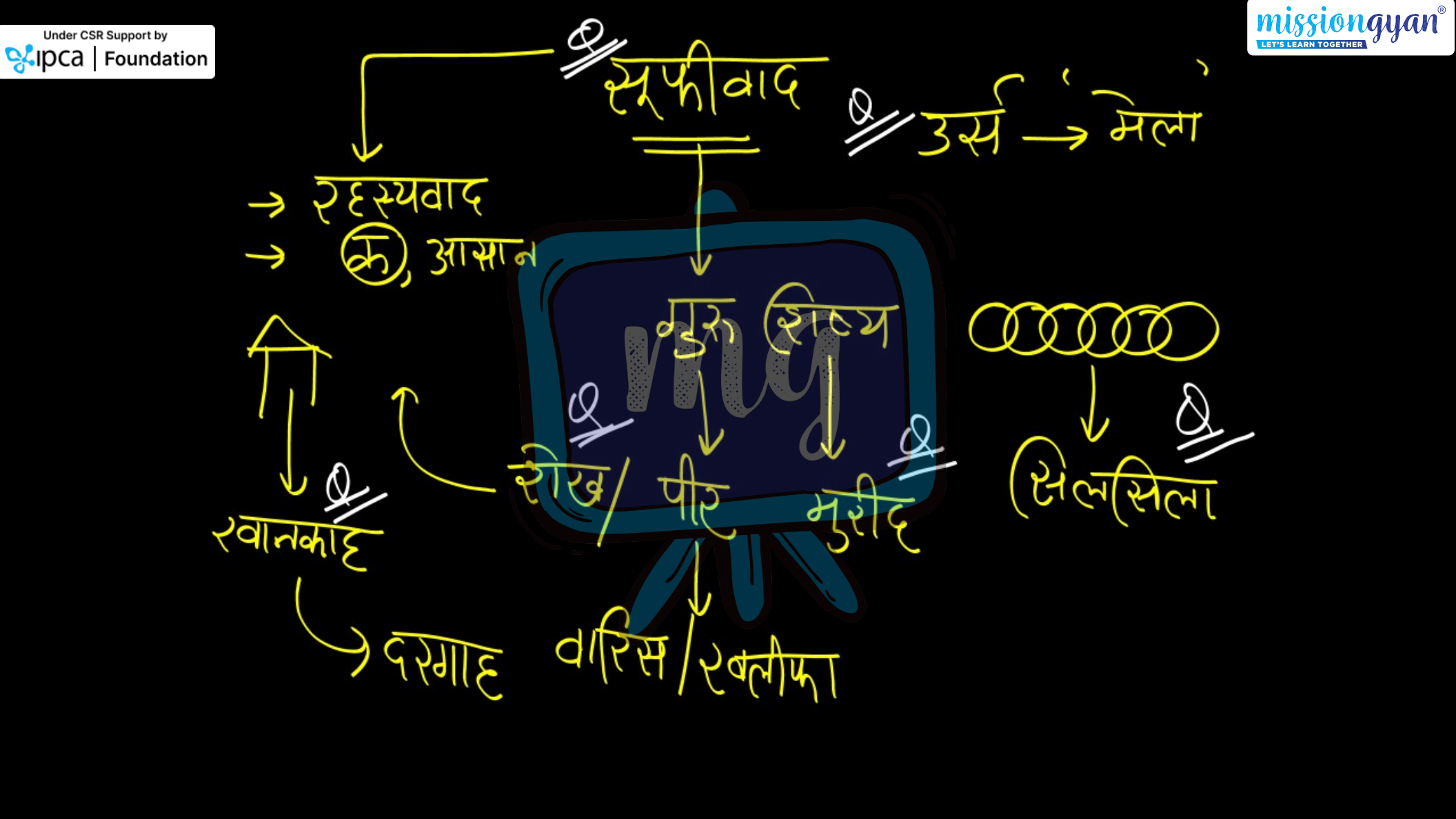
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

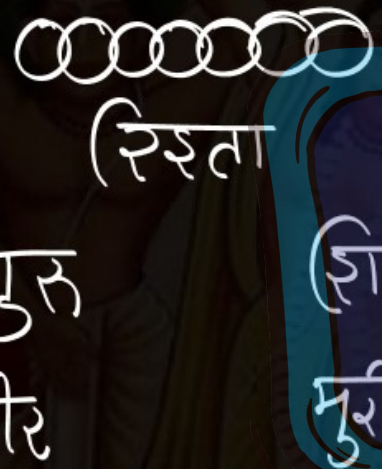
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफ़ी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सिलसिला क्या है और इनके नाम किस प्रकार रखे जाते थे?

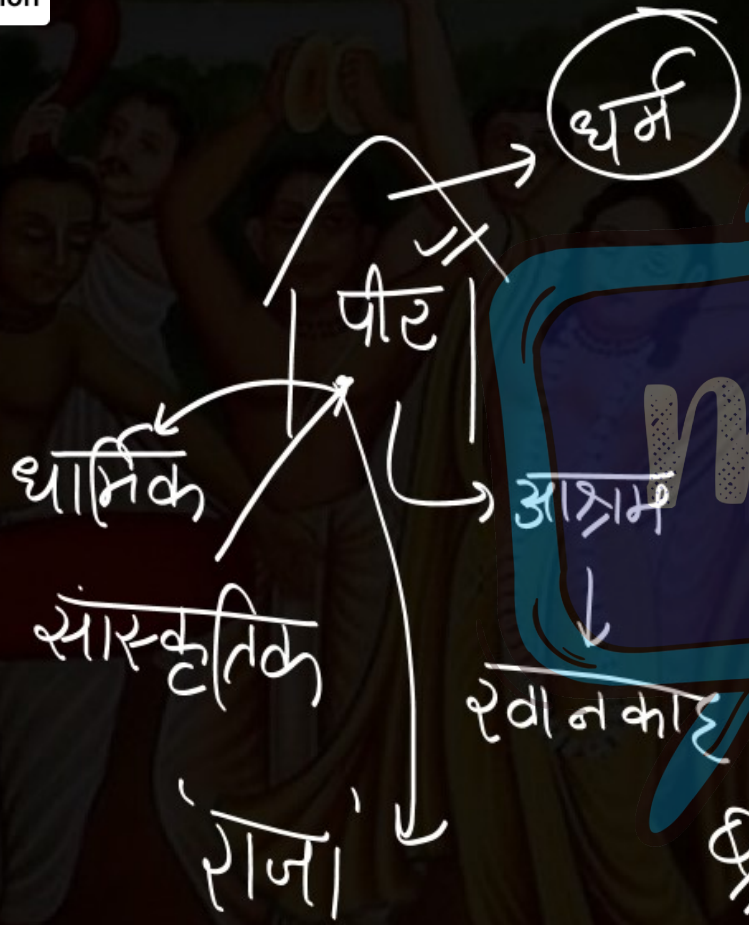


① पीर → नाम

② पीर → जगह

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

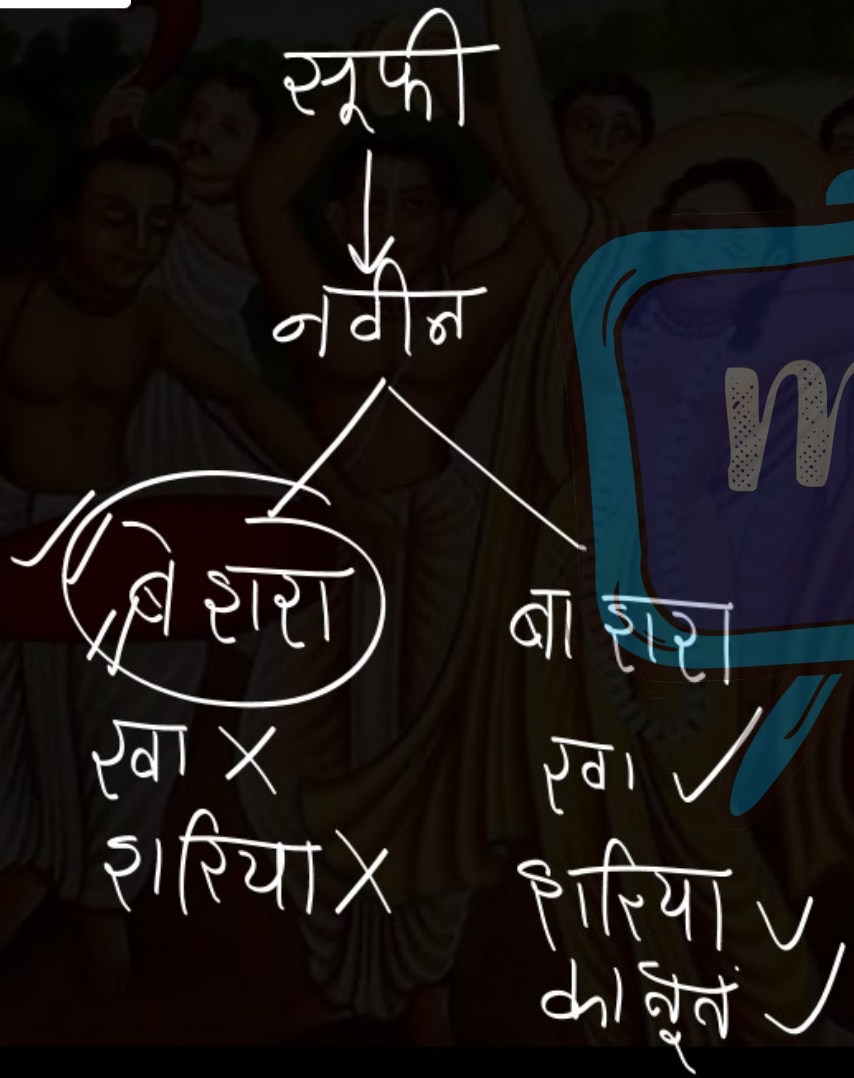


ख़ानक़ाह के बाहर

- कुछ रहस्यवादियों ने सूफ़ी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी।
- ख़ानक़ाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फ़कीर की ज़िंदगी बिताते थे।
- निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया। इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था- कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

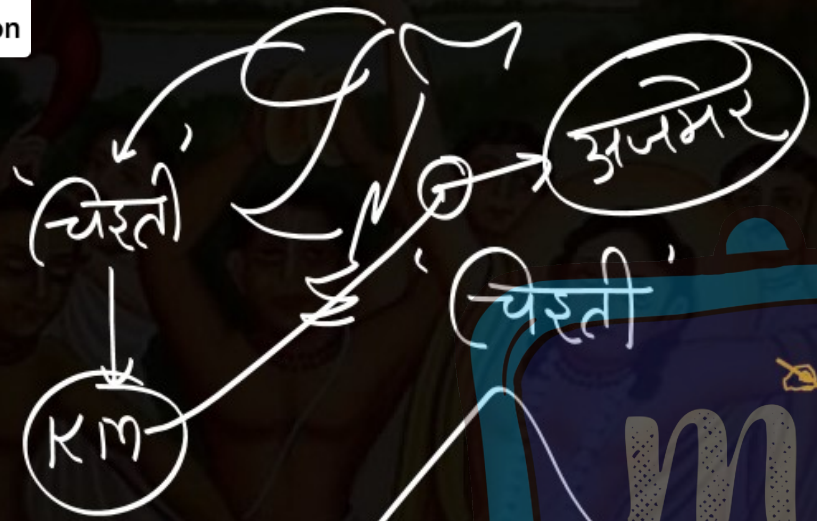
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे-शरिया कहा जाता था।
- इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफ़ियों से अलग करके देखा जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

- बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- कारण :

1. इन्होंने अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला और
2. भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशिष्टताओं को भी अपनाया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q चिश्ती सिलसिला उपमहाद्वीप
मे बड़े स्तर पर क्यों फैला?



① स्थानीय ✓
② भक्ति व शेषता

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती सिलसिले के मुख्य उपदेशक		
सूफ़ी	मृत्यु का वर्ष	दरगाह का स्थान
शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	1235	अजमेर (राजस्थान)
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी	1235	दिल्ली
शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर	1265	अजोधन (पाकिस्तान)
शेख निज़ामुद्दीन औलिया	1325	दिल्ली
शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहली	1356	दिल्ली

अफ़

कुतुब मिनार

योग। साधन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

